Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

पुष्टिमार्गीय शुद्धाद्वैत दर्शन में भक्ति परम्परा

तुषार श्रीमाली*

* शोधार्थी (इतिहास) भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – पुष्टि मार्ग शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है जिसमें पुष्टि का अर्थ–संपूर्ण पोषण, समृद्धि एवं जिसमें कोई कमी न हो। मार्ग का अर्थ – रास्ता, पथ अर्थात् ऐसा मार्ग जो व्यक्ति या जीव को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक रूपों में पुष्ट करता है या उसमें संपूर्णता प्रदान करता है। पुष्टिमार्ग को मुख्यत: प्रभु श्रीनाथजी से संबंधित मंदिरों व पीठों से संबंधित है। पुष्टिमार्ग के संस्थापक वल्लभाचार्य जी थे इस कारण पुष्टिमार्ग को वल्लभ सम्प्रदाय कहा जाता है। विरासत के रूप में विट्ठलनाथ जी द्वारा इसे आगे बढ़ाया गया।

A(A) शुद्धाद्वैत पद में दो समास है एक कर्मधारय जैसे– 'शुद्ध च तत्मद्वैतं शुद्धाद्वैतम'

दुसरा षष्टी तत्पुरूष जैसे – 'शुद्धयो: अद्वैतं शुद्धाद्वैतम'

माया संबंध से रहित कार्य कारण रूप जो ब्रह्म है वही शुद्ध है।

वल्लभचार्य जी द्वारा वैदिक सिद्धांत 'यस्य देव पराभक्तियर्था दैवे तथ गुरौ' गुरू के भक्ति भगवान के समान भक्ति जैसी होनी चाहिए।

शुद्धाद्वैत मत में किसी भी पदार्थ को नाशवान नहीं माना है प्रकट व अप्रकट अवस्था ही सबकी बतायी है।

शंकराचार्य के अद्वैत में सभी को नाशवान माना है।

पुष्टिमार्ग मूल रूप से वेदांत दर्शन संप्रदाय पर आधारित होकर उत्तर भारत में प्रसारित हुआ। वल्लभाचार्य जी को वैश्वानर अग्निस्वरूप बताया गया है। इनके द्वारा चार पारम्परिक वैष्णव संप्रदाय में से एक रूद्र संप्रदाय के प्रमुख जगदगुरू आचार्य की भूमिका में रहे।

पुष्टि भक्ति में भगवत्सेवार्थ प्रेमपूर्वक निष्काम धर्म व कर्म की व्याख्या की गई है जिसमें केवल स्वरूप प्राप्ति के अतिरिक्त बिना आकांक्षा के भक्ति समर्पण गया।

वल्लभाचार्य जी द्वारा निम्न व्याख्या की गई :–

सर्वदासर्वभावेन भजनीयो ब्रजाधिप:।
तस्मात्सर्वात्मना नित्यं श्रीकृष्ण: शरणमम।।

प्रेमपूर्विका सेवा द्वारा भागवतीय आधार (कृष्णवस्तु भगवान स्वयं) में कृष्ण ही सदा सर्वदा स्मरणीय तथा कीर्तनीय है।

ब्रह्म के साथ जीव व जगत के संबंध की व्याख्या करते हुए उनका मत था कि – 'जीव ब्रह्म का संदेश है, जगत भी ब्रह्म का संदेश है'

जीव व जगत अभेद है अंतर इतना है कि जीव में ब्रह्म का आनदांश आव्रत रहता है जबकि जड़ जगत में आनदांश व चैतन्यांश दौनो आवृत रहती है।

श्री शंकराचार्य जी के केवल द्वैतवाद के विपरित जबकी श्रीवल्लभाचार्य जी के अद्वैत में माया का संबंध अस्वीकार करते हुए ब्रह्म को कारण और जीव – जगत को उसके कार्य रूप में वर्णित कर तीनो तत्वो का ऐक्य प्रतिपादित किये जाने के कारण उक्त मत शुद्धद्वैतवाद कहलाया।

वल्लभाचार्य के निम्नलिखित ग्रंथों द्वारा में शंकराचार्य के अद्वैत एवं पुष्टिमार्गीय शुद्धाद्वैत के तुलनात्मक स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। वल्लभाचार्य जी के ग्रंथ सुबोधनी (श्री मदभागवत की टीका), तत्वदीप निबंध, अणुभास्य, ब्रह्मसूत्र भास्य, पूर्व मीमांसा, सिद्धांतमुक्तावली पुष्टिमार्ग शुद्धाद्वैत दर्शन का अनुसरण करता है इस दर्शन के अनुसार 'ईश्वर एक है ओर वो शुद्ध है' अर्थात् – शुद्धअद्वैतत्र शुद्धाद्वैत यह दर्शन श्री कृष्ण को सर्वोच्च देवता मानता है इसके अनुसार हर चीज/वस्तु का स्त्रोत कृष्ण है तथा स्वीकार किया जाता है कि मानव आत्मा कृष्ण के दिव्य प्रकाश से प्रकाशित है या ओतप्रोत है। वल्लभाचार्य जी द्वारा पुष्टिमार्ग में दर्शन की व्यवस्था निम्न प्रकार से की गई है – 'ब्रह्म माया से अलिप्त है इस कारण वह शुद्ध है और ब्रह्म माया से अलिप्त है इसी कारण अद्वैत है।'

वल्लभाचार्य जी के अनुसार तीन स्वीकार्यतत्व है– ब्रह्म, जगत, जीव ब्रह्म के तीन स्वरूप वर्णित है– अधिदैविक, आध्यात्मिक, अंतर्यामी रूप सपूंर्ण सृष्टि लीला के निमित ब्रह्म की आत्मकृति है।

जगत सत्य है और अहंता ममतात्मक संसार मिथ्या है। सिद्धांत अर्थात ऐसी शिक्षा जो हमें परिपूर्णता की प्राप्ति करा सके सिद्धांत ही वास्तविक दर्शन है अंतत: जो सिद्ध है अर्थात परिपूर्ण है वही सिद्धांत है। वल्लभाचार्य का सिद्धांत ब्रह्मवाद कहलाता है।

वल्लभाचार्य जी ने वेद ब्रह्मसूत्र, उपनिषद, गीता, श्रीमद्भागवत पर आधारित भास्य एवं उपदेश संस्कृत आप ने दिए।

उपर्युक्त पुरे दर्शन से वल्लभार्चाय जी मूलत: ब्रह्म पर अपनी बात प्रस्तुत करते है– यह सब कुछ ब्रह्म ही है और कुछ भी नही है।

शुद्धाद्वैत दर्शन के अनुसार शंकराचार्य के अद्वैत जगत जो जगत को अनिर्वचनीय है तो उसे मिथ्या नहीं कहा जा सकता और यदि वो मिथ्या है तो फिर अनिर्वचनीय नहीं हो सकता।

दर्शन के अनुसार जिस समय इस जगत पर दृष्टि डालते है तो मन में विचार होता है इसे बनाने वाला बड़ा बुद्धिमान है क्योंकि हम (जीव) की बुद्धि से यह जगत बहिर्भूत है तो जरूर इसे बनाने वाला सर्वज्ञ होना चाहिये वह अवश्य ही सबसे आदि है, अद्वितीय है, समर्थ और सर्वशक्तिमान, ऐश्वर्यमान है क्योंकि उसका यह विचित्र कार्य ही हमें यह गवाही दे रहा है।

A(B) श्री ब्रह्मादैकस्थापकाय नमः ब्रह्मवादः सुंसवृतः श्रुतयौ शैरते।
ब्रह्मवाद – सेवा – ब्रह्म शब्द की व्याख्या यहाँ ब्रह्म सगुण एवं निर्गुण दोनों रूपों में की गई है वल्लभाचार्य जी द्वारा इन दोनों ब्रह्म के स्वरूपों हेतु दो प्रकार सेवा की शुरूआत की गई प्रथम नाम सेवा जो निर्गुण ब्रह्म हेतु तथा द्वितीय स्वरूप सेवा। स्वरूप सेवा तीन प्रकार की होती है – तनुजा, विप्रजा, मानसी। मानसी सेवा पुनः दो प्रकार की होती है (1) मर्यादा मार्गी (2) पुष्टि मार्गी (श्रेष्ठ) बताया।

मार्यादा मार्गी मानसी सेवा पद्धति का आचरण करने वाला साधक अपनी ममता और अहं को देह करता है वहीं पुष्टिमार्गीय मानसी सेवा पद्धति वाला साधक अपने शुद्ध प्रेम के द्वारा श्री कृष्ण की भक्ति में लीन हो जाता है। पुष्टिमार्गी में ईश्वर के अनुग्रह से अपनी वांछित वस्तु प्राप्ति की परिकल्पना पुष्टि निहित होती है।

ब्रह्मवाद के संदर्भ में यह दर्शन बताता है। कि ब्रह्मण्ड में सभी का स्त्रोत एवं कारण है कही भी किसी भी धर्म में अद्वैतवाद का सबसे शुद्धरूप है। यह पूर्ण स्व से – सब कुछ, बिल्कूल सब कुछ पूर्णतया पूर्णरूप ब्रह्म से सबंध को ब्रह्मसबंध बताता है।

ब्रह्म के तीन स्वरूप
अधिभौतिक – विश्व
आध्यात्मिक – अक्षर ब्रह्म
अधिदैविक – श्रीकृष्ण

2(A) भक्ति :– पुष्टिमार्ग शुद्धाद्वैत के दर्शन को ही भक्ति में ढ़ालता है। पुष्टि शब्द का अर्थ – 'पोषण' है। श्रीमद्भागवत में ईश्वर के अनुग्रह को पोषण कहा गया है 'पोषण तदनुग्रह'
वल्लभाचार्यजी के अनुसार –'कृष्णानुग्रहरूपा हि पुष्टि कालादि बाधक अर्थात कालादि के प्रभाव से मुक्त करने वाला कृष्ण का अनुग्रह ही पुष्टि है। पुष्टि मार्ग के अनुग्रह में पुष्टिगीत के माध्यम से भक्त श्री कृष्ण की लीलाओं, कला, गुणों, दिनचर्या, गोपीयों की विहार लीला, वल्लभ वंश प्रंशसा आदि रूपों में किया जाता है। अनुग्रह संबंधित रचनाए पूर्णतः मौलिक होती है।

2(B) अष्टछाप मंडली – अनुग्रह गीतों के माध्यम से संगीत मार्ग का पुष्टिमार्ग में प्रवेश होता है जिसमें वल्लभाचार्यजी द्वारा मुख्य रूप से प्रारम्भ होता है जिसे आगे बढ़ाने का कार्य इनके पुत्र विट्ठलनाथ जी द्वारा किया गया।

अष्टछाप मंडली में आठ कवियों का समुह अनुग्रह गीतों का गायन करते है जिसमें प्रारम्भ में – वल्लभाचार्यजी द्वारा –सूरदासजी, कृष्णदासजी, परमानन्ददासजी, गोविन्ददासजी को दीक्षा प्रदान की गइ।

शेष चार को विट्ठलनाथ जी द्वारा दीक्षा दी गई जिनमें कुम्भनदास जी, छितरस्वामी जी, चतुर्भुजस्वामी जी, नंददास जी थे।

इन आठ कवियों के अतिरिक्त 72 उपासकों की पहचान से जाना जाता है जिनमें तानसेन, रसखान, ताजबीबी जैसे मुस्लिम संगीतकार हरिदास आदि विद्धतजनों का संकलन संकलित है।

2(C) श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र एवं लीलाओं के माध्यम का संदर्भ लेकर पुष्टिमार्ग में अष्ट (8) संख्या को विशेष महत्व दिया गया जिसमें कृष्ण जन्म अष्टमी, अष्ट कमल दल, अष्ट छाप कवि, अष्ट सोपान पद्धति, अष्टकली श्रृंगार, अष्ट गोपी लीला, अष्ट दर्शन महत्व आदि।

अष्टपुष्टिऐश्वर्य नवधाभक्ति

2(D) वल्लभाचार्य जी के द्वारा वैष्णव भक्तों हेतु पुष्टि साहित्य में नवधा भक्ति का उल्लेख किया है–

श्रृवंण कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनं।
अर्चन वन्दनं दास्यं सठयमात्म निवेदन।।

अर्थ – श्रवण (परीक्षित), कीर्तनं (शुकदेव) स्मरणं (प्रहलाद) पादसेवन (लक्ष्मी) अर्चन (पृथुराजा) वन्दन (अंकुर), दास्य (हनुमान) सब्य (अर्जुन) आत्मनिवेदन (राजाबलि)
उपर्युक्त भक्ति के नौ प्रकार तथा कृपा प्राप्त व्यक्तियों के नाम अंकित किये गए।

2(E) पुष्टि साहित्य में भक्ति की तीन प्रकार की अवधारणाएं दी गई है
(1) प्रवाह पुष्टि भक्ति – जन्म मरण चक्र बंधित क्रमिक मोक्ष हेतु उन्मुख।
(2) मार्यादा पुष्टि भक्ति – शास्त्रों से ब्रह्म ज्ञान द्वारा भगवद प्राप्ति।
(3) शुद्ध पुष्टि भक्ति – पूर्णतः भगवद शरण समर्पित।
शुद्ध पुष्टि भक्ति सबसे शुद्ध, सरल होती है।
पुष्टिमार्ग माधुर्य, भक्ति प्रेमाभक्ति, रागानुराग, सखा भाव आदि स्वरूपों या भावों से की जाती है।
भक्ति के विकास के तीन चरण पुष्टि साहित्य से प्राप्त होते है।
(1) प्रेम – निरन्तर
(2) आसक्ति – मध्यम स्तर
(3) व्यसन – उच्च स्तर

कृष्ण

3(A) :– वल्लभाचार्यजी के अनुसार आत्मा की अवस्थित तथा उस महान आत्मा के बीच संबंधों को भक्तिवाद कहा गया है।
पुष्टिमार्ग–कृष्ण – **'कृष्णात्परं नास्ति दैव वस्तुतौ दौष वर्जितम्'**

कृषिभूर्वाचकः शब्दाणेश्चनिवृर्ति वाचकः।
तयोरेक्यं परब्रह्म कृष्ण इत्याभिधियते।।

'कृषि' शब्द का अर्थ है शक्ति और 'ण' शब्द का अर्थ है–परमसुख इन दोनों का अर्थ है समूह – परमब्रह्म है।

जीव परमात्मा का अंश है जिस प्रकार आग से चिन्गारी को पृथक नहीं किया जा सकता उसी प्रकार जीव को परमात्मा से पृथक नहीं किया जा सकता।

'सर्वोद्धार प्रयत्नात्मा कृष्णः प्रादुर्बभूवह'

सम्पूर्ण जगत का उद्धार का तात्पर्य अपने साथ लेकर श्रीकृष्ण अपने पूर्ण रूप से प्रकट होते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

A(A)–(1.) शुद्धाद्वैतदर्शन लेखक देवार्षेभट्ट श्री रमानाथ शास्त्री
प्रकाशक – विद्या विभाग मंदिर मण्डल नाथद्वारा
पेज न. 67–69 एवं 71–72
(2.) सुबोधिनी – वल्लभाचार्य – विद्या विभाग म.म. नाथद्वारा
पेज न. 31,37,57
A(B)–(1.) ब्रह्मवाद – लेखक – देवार्षि श्री रमानाथजी शास्त्री
प्रकाशक – विद्या विभाग म.म. नाथद्वारा
पेज न. 6–12 एवं 103–104
(2.) सिद्धांतमुक्तावली – वल्लभाचार्य पेज नं. 38
(3.) पुष्टिमार्गीय प्रकीर्ण ग्रंथ संग्रह – त्रिपाठी यदुनन्दन नारायण जी शास्त्री

मं.म. नाथद्वारा विद्या विभाग पेज नं. 227, 235

2(A)- (1.) भक्ति हंस - श्रीमद् विट्ठलेश्वर प्रभु चरण
विद्या विभाग - म.म. नाथद्वारा
पेज न. 7-18, 21, 35

2(B)- श्रीकृष्णलीला विस्तार श्री सुरदास जी
विद्या विभाग - म.म. नाथद्वारा
पेज न. 27

2(C)- अष्टकला संग्रह - त्रिपाठी यदुनन्दन जी शास्त्री
विद्या विभाग - म.म. नाथद्वारा
पेज न. 288

2(D)- सेवा भक्ति कौमुदी - श्री बालकृष्ण भट्ट - प्रणीत
पेज न. 15,17

2(E)- पुष्टि साहित्य संग्रह - श्री रमानाथ शास्त्री
विद्या विभाग - म.म. नाथद्वारा
पेज न. 13, 78, 122

3(A)- (1.) श्रीकृष्णचरितम - श्री विट्ठलनाथ जी
विद्या विभाग - म.म. नाथद्वारा
पेज न. 17, 63
(2.) शुद्धाद्वैत - देवार्षि भट्ट रमानाथ जी शास्त्री
पेज न. 237, 238

****